ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.20, No.1, Jan. – Mar., 2025/56

संस्कृत साहित्य (वाल्मीकि रामायण) में राम कथा का मूल्यांकन

ऋचा पाठक

https://doi.org/ 10.61410/ had.v20i1.230

सारांश :–भारतीय वांङमय में श्री वाल्मीकीय रामायण आदि काव्य के रूप में प्रतिष्ठित है। इस महामहनीय आदि काव्य ने भारतीय वांङमय को ही नहीं अपितु सारे संसार के वांङमय को प्रभावित किया है। भारत के विविध रामायण एवं अधिकांश काव्य, नाटक, चम्पू, आख्यान, आख्यायिका आदि का उपजीव्य यह रामायण है।

महर्षि वाल्मीकि जी ने अपौरुषेय वेदों, उपनिषदों तथा देवर्षि नारद जी के उपदेशों से श्री राम की कथावस्तु जानकर एवं समाधिजनित ऋतम्भरा प्रज्ञा से रामायण के सम्पूर्ण चरित्रों का प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर रामायण की रचना की। वे राम के समकालीन महर्षि थे, अतः इसमें वर्णित कथावस्तु सत्य घटना के अन्तर्गत है। इसीलिए रामायण की अद्वितीय लोकप्रियता निरंतर अक्षुण्ण ही नहीं वरन शताब्दियों तक बढ़ती रहीं, क्योंकि मानव हृदय को आकर्षित करने की अद्वितीय शक्ति जो रामकथा में विद्यमान है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भारतीय मनीषियों की दृष्टि में राम और कृष्ण की कथाएं केवल वाग्विलास या कंठशोषण मात्र नहीं है, वे अनुपम शांति, भक्ति तथा मुक्ति देने वाली हैं। इसी कारण उनकी लोकप्रियता है।

मूल शब्द :– रामकथा, वाल्मीकि रामायण, रामचरित्र, बालकाण्ड

प्रस्तावना :– राम कथा की व्यापकता एवं लोकप्रियता का श्रेय श्री वाल्मीकि रामायण को ही है। विश्व साहित्य के इतिहास में शायद ही किसी ऐसे कवि का प्रादुर्भाव हुआ है जिसने भारत के आदि कवि के समान इतने व्यापक रूप से परवर्ती साहित्य को प्रभावित किया हो।

कहा जाता है कि रामचरित्र शत कोटि (एक अरब) श्लोकों में विस्तृत है, अर्थात अपार है और एक–एक अक्षरों में महापातकों के विनाश की क्षमता है –

'चरितं रघुनाथस्य शत कोटि प्रविस्तरम्।

एकैकमक्षरं पुंसा महापातक नाशम्।।'

रामचरित्र में प्रत्येक अक्षर में महापातकों के विनष्ट करने की शक्ति निहित है। 'राम अनंत गुण अनंत कथा का विस्तार' श्री राम जी के अनंत गुण हैं और उनकी कथा का विस्तार भी अनंत है। संसार में राम से बढ़कर सत्य मार्ग पर आरूढ़ कोई दूसरा है ही नहीं – 'नहिं रामात् परोलोके विद्यते सत्पथे स्थितः।

राम के इस शत कोटि प्रविस्तर चरित् का सार चौबीस सहसत्रश्लोकों में महर्षि वाल्मीकि ने अपने रामायण में निबद्ध किया है। इसके पाठ एवं स्वाध्याय का अत्यधिक महत्व शास्त्रों में बताया है।

रामायण भारतीय संस्कृति का महान प्रतिनिधि महाकाव्य है। भारत की कथा परम्परा में रामकथा अनुपम है। सर्वोत्कृष्ठ विश्वकथा का स्वरुप रामकथा ने स्वतः धारण कर लिया है। रामायण ने समस्त जन–हृदय को प्रभावित किया है। इस ग्रन्थ के नायक और नायिका सर्वश्रेष्ठ मानव स्वीकार किये गए, जिन्होंने अपने आचार व्यवहार के माध्यम से मानव मात्र को सदाचार की शिक्षा दी। श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है :–

- **असिस्टेंट प्रोफसर, प्राचीन इतिहास विभाग, का0सु0साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या।**

बंदऊँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ।[1]

सरवर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित।।

अर्थात् – मैं उन वाल्मीकि मुनि के चरण कमलों की वंदना करता हूँ, जिन्होंने रामायण की रचना की है, जो खर (राक्षस) सहित होने पर भी (खर (कठोर) से विपरीत बड़ी कोमल और सुंदर है तथा जो दूषण (राक्षस) सहित होने पर भी दूषण अर्थात् दोष से रहित है।

बालकाण्ड के प्रथम सर्ग के अनुसार श्री वाल्मीकि जी ने नारद जी से पूछा कि वर्तमान काल में इस धरती पर गुणवान वीर्यवान, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, दृढ़ प्रतिज्ञ सत्य वक्ता, चरित्रवान, विद्वापन सामर्थ्यवान, आत्मवान, प्रतिमान किसी की निन्दा न करने वाला प्राणि मात्र के हित में तत्पर, क्रोधपयी और अद्वितीय प्रियदर्शन विषयी भूत इन गुणग्रामों से सम्पन्न कौन महापुरुष है ? इन सोलह गुणों में समस्त श्री रामचरित्र समाया हुआ है। इन्हीं की व्याख्या सम्पूर्ण रामायण में है।

श्री नारद जी ने भावपूर्ण वाणी में उत्तर दिया –

इक्षवाकु वंश प्रभवों रामो नाम जनैः श्रुतः।[2]

महान् पवित्रवंश इक्ष्वाकुवंश में आविर्भूत प्रख्यात महापुरुष है। हे महर्षि! आपके द्वारा पूछे गये समस्त गुण उन्हीं श्री राम में विद्यमान हैं। और जिनगुणों को आपने नहीं पूछा है वे भी समस्त गुणगज उन्हीं श्री राम में विराजमान हैं।

श्री राम कथाविशारद श्री नारद जी ने सम्पूर्ण रामकथा बीज रूप में श्री वाल्मीकि जी को सुना दी। यह संक्षिप्त रामकथा श्री रामायण जी के प्रथम सर्ग में है इस सर्ग में सौ श्लोक हैं। इसी की व्याख्या सात काण्डों में है। यही श्रीराम कथा का बीज है।

बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में बहुविश्रुत क्रौच्चवध प्रसंग उपनिबद्ध है। श्री वाल्मीकि कथा सुनने के पश्चात् तमसा नदी के तट पर आये वहां पर क्रौंच्च पक्षियों का एक जोड़ा विहार कर रहा था। उसी समय एक निषाद ने नर क्रौंच्च को वाण से मार डाला स्त्री पक्षी करूण स्वर में विलाप करने लगी, इस करूण क्रंदन को सुनकर श्री वाल्मीकि का हृदय द्रवित हो गया। यह अधर्म हुआ है। यह सोचते–सोचते महर्षि के करूणा विगलित हृदय से एक श्लोक प्रस्फुटित हुआ जो उस निषाद के प्रति शाप के रूप में निकला–

माँ निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाक्वतीः समाः।[3]

यत् क्रौंच्चमिथुना रेवधीः काममोहितम्।।

प्रत्यक्ष देखने में तो इस श्लोक में शाप दिख रहा है। महर्षि की करूणा छलक रही है, परन्तु सूक्ष्मदर्शी सन्तोंने, आचार्यो ने इन बत्तीस अक्षरों के अनुष्टुप् छन्द में उनके भावों के दर्शन किये हैं। कतिपय आचार्यो ने इसे आशीर्वादात्मक मङग्लाचरण माना है और कुछ आचार्यों ने इन बत्तीस अक्षरों में सातों काण्डों की कथा का बीज है, ऐसा अनुसंधान किया है।

महर्षि वाल्मीकि के मुखार बिन्द से निकली हुई यह पहली कविता है। महर्षि ने अपने प्रिय शिष्य श्री भरद्वाज मुनि से कहा कि हे वत्स! मेरे मुख से सहसा जो वाक्य निकल गया है वह विलक्षण है। यह चार चरणों में आबद्ध है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ–आठ अक्षर हैं यह कि छन्द वीणा कीलय पर भी भली–भांति गाया जा सकता है।

पादबद्धोंड अक्षर समस्तन्त्री – लयसमान्वेतः।। **(1/2/18)**

महर्षि वाल्मीकि स्नानदि आदि में निवृत होकर अपने आश्रम में आसमय पर विराजमान थे, परन्तु उनका मन सोच रहा था, अहा/! मेरे हृदय में कैसी करूणा आ गई, मेरे मुख से सहसा या

सुन्दर छन्द कैसे निकल गया ? उसी समय अचानक ब्रह्माजी मुनिश्रेष्ठ से मिलने के लिए पधारे। श्री बह्माजी के सामने बैठकर भी श्री वाल्मीकि क्रोञ्ची की करूण चीत्कार का ही ध्यान करने लगे। अपने मुख से निकले हुए छन्द का स्मरण करने गले। उस समय ब्रह्माजी ने कहा कि हे ब्रह्मान्। इस छन्द के विषय में विचार न करें। मेरे संकल्प वा प्रेरणा से ही आपके मुख से ऐसी विलक्षण–वाणी निकली है–

श्लोक एवास्त्वयं बद्धो नात्र कार्या विचारणा।[5]

मच्छन्दांदेव ते ब्रह्मन् प्रवृत्तेयं सरस्वती।।

अतः आप इस विषय में कोई अन्यथा विचार न करें अब आप मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र के सम्पूर्ण चरित्रों का विस्तार पूर्वक वर्णन करें। आपने श्री नारद जी के मुख से जैसे श्रवण किया है उसी के अनुसार वर्णन करिये भगवान श्री नारद की कृपा से आपको श्री राम जी के गुप्त एवं प्रकट सम्पूर्ण चरित्र अज्ञात होने पर भी ज्ञात हो जायेंगे–

तच्चाप्यविदितं सर्व विदितं ते भविष्यति।[6]

हे मुनिश्रेष्ठः मेरा आर्शीवाद है कि इस काव्य में अंकित आपकी कोई भी बात अनृत– असत्य नहीं होगी, असम्भावित अर्थ वाली नहीं होगी।

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।[7]

आप अपनी तपोभूत लेखनी के द्वारा जो कुछ भी लिख देंगे वह चरित्र करूणामय भक्तवत्सल श्री भगवान रामचन्द्र परमात्मा को करना पड़ेगा।

यद्यद्विया त उरूगाय विभायन्ति

तत्तदद्धपुंः प्रणय से सदनुग्रहाय।।[8]

इस प्रकार आश्वृत करके, आशीर्वाद और वरदान दे करके रामचरित्र रचने की आज्ञा देकर ब्रह्माजी अन्तर्धा न हो गये। महर्षि समाधि के द्वारा सपरिकर श्री रामचन्द जी के चरित्रों का अनुसंधान करने लगे। महर्षि वाल्मीकि जी के मन में श्रीराम जी के मंगलमय चरित्र नृत्य करने लगे।

ततः पश्यति धर्मात्मा तत्सर्वं योगमास्थितः।[9]

पुरा यत् तत्र निर्वृत्तं पाणवामलकं यथा।।

इस प्रकार श्री वाल्मीकि जी ने पूर्वकाल में जो–जो चरित्र हुए थे उन सबको प्रत्यक्ष देखा। सपरिवार श्री राम जी का हँसना, बोलना, चलना और राज्य पलायन आदि जितनी जितनी चेष्ठाएं हुई उन सबका प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। इस प्रकार वाल्मीकि जी ने श्री मरवाहमी की रामायण का निर्माण किया।

रघुवंशस्य चरितं चकार भगवानमुनिः।[10]

यह निर्माण कब हुआ इसका भी निर्देश मिलता है

प्राप्त राज्यस्य रामस्य वाल्मीकि र्भगवानृषिः

चकार चरितं कृत्स्त्रं विचित्र पद मर्थवत्।

चतुर्विंशत्सहस्राणि श्लोका मुक्तवानृषिः

तथा सर्गशतान् पंच षट्काण्डानि तथोन्तरम्।।[10]

रावण का वध करके वन से लौटकर जब श्री राम जी ने श्री अयोध्या के राज्य का शासन अपने हाथ में ले लिया, तत्पश्चात् श्री रामायण महाकाव्य का निर्माण हुआ है। विलक्षण पदों और अर्थों में सम्पन्न इस श्री रामायण महाकाव्य में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने चौबीस हजार श्लोक, पांच सौ सर्ग तथा सात काण्डों का प्रतिपादन किया है। प्रथम काण्ड का नाम 'बालकाण्ड' है। यह संक्षिप्त कथा श्री रामायण जी के प्रथम सर्ग में ही है। इस सर्ग में सौ श्लोक हैं। इसकी की व्याख्या सात काण्डों में है। यहीं श्री राम कथा का बीज है। यही बीज बढ़कर शतकोटि प्रविस्तरम् के रूप में विशाल वट वृक्ष हो गया।

इस प्रकार बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड इन सात काण्डों में आदि कवि ने श्री राम के जन्म, उनके महान पराक्रम, उनकी लोक प्रियता से लेकर श्री राम जी द्वारा सीता जी का परित्याग आदि सम्पूर्ण राम–चरित्र श्री वाल्मीकि जी ने रामायण महाकाव्य में अंकित किया है। ध्यातव्य है कि वाल्मीकि रामायण का नाम दशानन बध अथवा पौलस्त्यवध भी बताया गया है।

श्री रामचन्द्र जी का अपार चरित्र सागर गागर में समा गया। अलौकिक महाकाव्य निर्मित हो गया। श्री वाल्मीकि ने लव कुश को श्री रामायण जी का विधिवत् अध्ययन कराया। वे श्रीमद्रामायण के अधिकारी विद्वान हो गये। जानकीनन्दन श्री लव कुश ने श्री अयोध्या जी की गलियों में, राजमार्ग पर तन्त्री के तारों को झंकृत करते हुए, वीणा बजाते हुए मधुर स्वर में श्री रामकथ का गान करना प्रारम्भ किया।

वाल्मीकि कभी उपदेशक या शिक्षक के रूप में अपनी बात नहीं कहते, बल्कि व अपने पात्रों को प्रवक्ता बना देते है। वे भी अपने आचरण के माध्यम से अपनी बात कह देते हैं। कुछ आदर्श पात्र हैं जैसे राम, भरत, लक्ष्मण, सीता, सुमित्रा, सुमन्त, गुट, जटायु, शबरी, हनुमान आदि ये विभिनन मानवीय गुणों का आदर्श प्रस्तुत करते है। उनका आचरण देखकर पाठक स्वयं सोचने लगते हैं कि आदर्श पुत्र हो तो ऐसा हो। भाई का प्रेम पत्नी की पति भक्ति, स्त्री की सेवा भावना, संकट में साथ देने वाला मित्र, अपनी सुविधा की उपेक्षा अपने स्वामी की सुरक्षा पर ध्यान देने वाला सेवक एक समर्थ व्यक्ति जो अपने कर्तव्य का पालन समर्पित भावना और निष्ठा से करता है। इन सभी आदर्शों के प्रतिदर्श रामायण में ही मिलते हैं।

रामायण मुख्यतः एक पारिवारिक महाकाव्य है। इस काव्य का मूल स्वर परिवार है जो कि समाजिक समरसता, मानव–गौरव और भस्तृत्व की विराट भावम की बुनियाद है। इसमें तीन प्रकार के भ्रातृ–युगल दिखाई देते हैं – राम और भरत, बाली और सुग्रीव, तथा रावण और विभीषण। तीन प्रकार के जीवनसाथी दिखाई देते हैं। राम और सीता, बाली और तारा तथा रावण और मंदोदरी। सीताराम आदर्श के प्रतिरूप हैं। बाली और तारा में समानता होने पर भी समरसता बराबर है। रावण और मंदोदरी में पर्याप्त अंतर होने के बाद भी एक दूसरे के प्रति अनुराग सद्भाव और सदाशय में कोई कमी नहीं है। सीता, तारा और मंदोदरी के स्वभाव व्यवहार और आदर्श संस्कार के सभी स्त्री–पुरुषों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते है।

वैदिक दृष्टि और काव्य सृष्टि की क्षमता से सम्पन्न वाल्मीकि ने रामायण के माध्यम से वेद का सार और वैदिक सूक्तियों का वैभव मानव–जाति तक पहुंचाया है। सुन्दर काण्ड इस प्रकार की महत्वपूर्ण अभिव्यंजना का भंडार है।

रामकथा की लोकप्रियता का प्रमाण विविध शैलियों में उसका प्रस्तुतीकरण होना भी रामकथा–प्रवचन गायन, रामलीला, लोकगीत और नृत्य आदि कई शैलियों में आज भी प्रस्तुत की जाती है। अपने शोक को श्लोक में प्रकट करने वाले वाल्मीकि आदि कवि कहलाएं। वे कवियों के प्रथम

सृष्टि पुरुष हुए, तभी तो विश्व' जैसे संस्कृत भाषा के शब्द कोश में कवि का अर्थ ही वाल्मीकि से लिया गया है।

सन्दर्भ सूची –

1. श्रीराम चरितमानस 1/14(घ)
2. वा0रा0बा0 (1/1/8)
3. वा0रा0बा0 (1/2/15)
4. वा0रा0बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, (1/2/31)
5. वही (1/2/35)
6. वही (1/3/35)
7. श्री मद्भागवत (3/9/11)
8. वा0रा0बा0 (1/3/6)
9. वही (1/3/9)
10. वही (1/4/1–2)